वेलेन्टाइन्स डे के किस्से

विवाह भारतीय अमेरिकी शैली

एन ली शेषाद्रि

पीटर और हैदर मालाकार

जोड़ी नम्बर 1

क्रिस्टोफर ग्लेन

वेलेन्टाइन्स डे फिर आने वाला है- प्रेम और अंतरंगता, चांदनी रातों में छज्जों या समुद्रतटों पर संसार से चुराए दो पलों की यादें जगाने वाला दिन। अपने माता-पिता की अपेक्षाओं पर पानी फेरते हुए सात समंदर पार के परदेसियों से ब्याह रचाने वाली मेरी और मेरे पति और भारत और अमेरिका की हम जैसी हज़ारों जोड़ियों के लिए वेलेंटाइन्स डे सामाजिक प्रचलन पर प्रेम और कर्म पर कामदेव की विजय का प्रतीक है।

10 साल पहले अमेरिकी विश्वविद्यालय के परिसर में मिले श्रीकांत और मैं जानते थे कि विवाह के बंधन में बंधकर और अग्नि के फेरे लेकर हम जिस जीवन की अपेक्षा कर सकते हैं, वह रॉबर्ट फ्रॉस्ट के रोडलेस ट्रेवल्ड की तरह आम अनुभव से काफी अलग ही होगा। लेकिन हमें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि दो संस्कृतियों का मिलन हमारे दैनिक अमेरिकी और अब भारतीय जीवन को क्या बना देगा।

वाशिंगटन, डी.सी. और अब नई दिल्ली में रहते मुझे यह सुखद अनुभव हुआ कि मिश्रित युगलों की इस राह में हम अकेले नहीं हैं। अपने आसपास की कई अमेरिकी और भारतीय जोड़ियों को देखने के बाद मैंने पाया कि एक दूसरे से तालमेल की हमारी रणनीतियां काफी दिलचस्प और कभी-कभी हंसा देने की हद तक मज़ेदार हैं। मिश्रित युगलों के सुखद वैवाहिक जीवन सच्चाई हैं, या मिथक या आनंद? कुछ साहसी जोड़ियों ने अपनी-अपनी कहानी सुनाकर मेरी इस शोध यात्रा को सरल बनाने का प्रयास किया।

भारतीय-अमेरिकी जोड़ियों के एक-दूसरे से तालमेल के प्रयास दिलचस्प और मज़ेदार होते हैं।

कैसे हुआ मिलन

(और जैसा कि करीना कपूर ने एक बार कहा: जब वी मेट)

साभार: मोनी डफ़ी

केविन और मोनी डफ़ी

जोड़ी नम्बर 2

साभार: एरियाना रवींद्रनाथ

सुनील और एरियाना रवींद्रनाथ

जोड़ी नम्बर 3

केन डॉक्टर

अंशुल और जेनिका कौल

जोड़ी नम्बर 4

आज की भारतीय-अमेरिकी जोड़ियां कक्षाओं में, मित्रों के माध्यम से, चैट रूम्स में- बस मिल जाते हैं! शुरू में ज़्यादातर जोड़ियों और उनके माता-पिता के मन में प्रेम साथी जैसी कोई बात नहीं थी।

जोड़ी नम्बर 1: काउंसिलिंग में स्नातकोत्तर उपाधिधारी लॉस एंजिलिस की हैदर हैलस्टैड की मुलाकात भारतीय इसाई डॉक्टर पीटर मालाकार से तब हुई जब वह उत्तर-पूर्वी भारत में लोगों की सेवा के अवसर तलाश रही थीं, रोमांस उनके ख्वाबों-ख्यालों में भी नहीं था। वह बताती हैं, ''मैं कैलिफ़ोर्निया लौट गई लेकिन पीटर मुझे ई-मेल भेजते ही रहे। मैं महीनों इसलिए जवाब न देती कि कहीं वह गलतफहमी न पाल लें।'' भारत के दूरदराज के रुढ़िवादी गांव के जीवन और परंपराओं के बारे में जानकारी होने के चलते वह ज़्यादा सतर्क थीं। लेकिन डॉक्टर आग्रह करते रहे। आखिर हैदर दिल्ली लौटीं जहां पीटर नौकरी कर रहे थे। दोनों को समझ में आने लगा था कि एक-दूसरे से अलग रहने के बजाय वे साथ रहें तो ज़्यादा अच्छा है- आखिर दिसंबर 2005 में वे कैलिफ़ोर्निया में विवाह बन्धन में बंध गए। अब यह जोड़ी नई दिल्ली में एक गैर-सरकारी संगठन चला रही है।

जोड़ी नम्बर 2: अनिवासी भारतीय पत्रकार मोनी बसु जब 13 साल की थीं, उनका परिवार अमेरिका में आ बसा। वह बताती हैं, ''मेरे पिता ने कहा था कि वह कभी मुझ पर शादी कर लेने का दबाव नहीं बनाएंगे।'' दक्षिणी अमेरिकी राज्य जॉर्जिया में अटलांटा-जर्नल कॉंस्टिट्यूशन में रात की पाली में काम करते उनकी मुलाकात साथी संवाददाता केविन डफ़ी से हुई।

जोड़ी नम्बर 3: साझे दोस्तों के माध्यम से दक्षिण भारतीय-मलेशियाई मूल के छात्र सुनील रबीन्द्रनाथ की मुलाकात दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में गहरी रुचि रखने वाली अमेरिकी सहपाठिनी एरियाना लियॉन से हुई। दोनों ओहायो यूनिवर्सिटी में साथ पढ़ते रहे और अब वाशिंगटन डी.सी. में रहते हैं।

जोड़ी नम्बर 4: कश्मीरी अंशुल कौल और जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ एडवांस्ड इंटरनेशनल स्टडीज़ के दक्षिण एशियाई अध्ययन कार्यक्रम की समन्वयक जेनिका डॉक्टर की मुलाकात भारत में तब हुई जब जेनिका वहां प्रशिक्षु के रूप में कार्य कर रही थीं। अंशुल हिंदू हैं, जेनिका यहूदी और एकात्मवादी हैं। दोनों वाशिंगटन, डी.सी. में रहते हैं और दो से तीन होने का इन्तज़ार कर रहे हैं।

माता-पिता से मुलाकात
(तो तुम हमारी बेटी का हाथ मांगने आए हो?)

अपने भावी ससुरालियों से मिलना किसी भी संस्कृति में कुछ असहज बनाता है, लेकिन जब मामला परदेशी ससुरालियों का हो तो जरा डर भी लगता है। कुछ मामलों में तो सासजी को खुश करना ज़रूरी होता है। अंशुल जब पहली बार अमेरिका में जेनिका के माता-पिता से मिले तो उनकी सास कुछ परेशान थीं- बेटी का मंगेतर उसका हाथ क्यों नहीं थाम रहा था या प्यार नहीं दिखा रहा था? क्या वह सचमुच उसे चाहता है? अब उन बेचारी को क्या पता था कि खासतौर पर अपने भावी ससुरालियों के सामने अंशुल के लिए अपनी आंतरिक भावनाओं के प्रदर्शन से बुरी बात और कुछ नहीं हो सकती।

और अमेरिकी पिता भी कुछ कम नहीं होते। हैदर के पिता अपनी बेटी की पीटर से सगाई से पहले खास अपने होने वाले दामाद की जांच-परख करने कैलिफ़ोर्निया से भारत आए। पीटर ने अपने ससुर का दिल जीत लिया (मिस्टर हैलस्टेड रॉबर्ट डि नीरो की तरह ज़्यादा कड़क स्वभाव के नहीं थे) और उनकी सगाई भारतीय संस्कृति के रंग में रंगी थी। लेकिन हैदर अमेरिकी ढंग की सगाई भी चाहती थीं, इसलिए उनकी अमेरिकी मित्र की सलाह पर पीटर ने नई दिल्ली के पास की एक झील में नौका विहार करते विवाह का प्रस्ताव रखना तय किया। हुआ यह कि जब वह झील पर पहुंचे तो पता चला कि उसे सूखे तो मुद्दत हो गई और अब उस में गाएं चर रही हैं। खैर, पीटर ने चाय मंगवाई और घुटनों के बल बैठकर हैदर से उनका हाथ मांग लिया।

पूर्व और पश्चिम का मेल
(मेरी शेरवानी का रंग कैसा है?)

भारतीय-अमेरिकी विवाहों की योजना बनाते हुए बहुत रचनात्मकता और व्यवहार कुशलता की ज़रूरत पड़ती है। हमारी सभी जोड़ियों ने दोनों पक्षों की ज़रूरतें पूरी करने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाए।

सुनील और एरियाना के विवाह के लिए दो समारोह हुए और दोनों में दोनों पक्षों की परंपराओं का सम्मान किया गया। अमेरिकी ढंग से हुए विवाह समारोह के लिए सुनील के परिवार ने चर्च को सजाने के लिए हिन्दू शैली के अलंकरण और प्रतीक भेजे- दूल्हे ने जीवन में पहली बार औपचारिक टक्सैडो सूट पहना तो दुल्हन ने परम्परागत अमेरिकी सफेद पोशाक की जगह जामुनी रंग की साड़ी। एरियाना ने मलयाली स्टाइल की साड़ी पहनी और सुनील की मां और दादी के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लिया।

भारत में जेनिका और अंशुल का विवाह पांच दिन तक चला। दावतों, संगीत, धार्मिक रस्मों का रोचक

दौर था। अमेरिका में हुए समारोह में जिस मंडप के नीचे दूल्हा-दुल्हन को खड़ा किया गया वह यहूदी हॉप्पा और हिन्दू मंडप का मिलाजुला रूप था, स्वस्ति पाठ के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का पाठ हुआ और नवदम्पत्ति के लिए आयोजित समारोह में पंजाबी भांगड़ा का बोलबाला रहा।

हैदर और पीटर का विवाह बहु-सांस्कृतिक लॉस एंजिलिस में हुआ और उसमें क्षेत्र में उपलब्ध तमाम भारतीय रंग और सुगंधों की छटा देखने को मिली। दुल्हन की सखियों ने दिल्ली में सिले गए लहंगे पहने जिनके नाप ई-मेल से दर्ज़ी को भेजे गए थे और हैदराबाद की मूल निवासी एक परिचिता ने पारम्परिक भारतीय विवाहभोज के व्यंजन पकाए। समारोह का सबसे मर्मस्पर्शी क्षण वह था जब पीटर ने असम में अपने माता-पिता को फोन मिलाया- और रिसीवर से जुड़े माइक्रोफोन पर संसार के दूसरे छोर से नवदम्पत्ति के सुखमय जीवन के लिए प्रार्थना करते पीटर के माता-पिता की आवाजों से चर्च गूंज उठा।

वेलेन्टाइन्स डे

आम मान्यता के उलट वेलेन्टाइन्स डे की शुरुआत अमेरिका में नहीं हुई। 14 फ़रवरी को रोमांटिक कार्ड, फूल, मिठाइयां देना और समय निकालकर अपने खास व्यक्ति के सामने अपनी भावनाओं का इजहार करने की परंपरा यूरोप में विकसित हुई और आप्रवासियों के साथ अमेरिका पहुंची। अमेरिका में इस दिन कहीं भी छुट्टी नहीं होती। लेकिन ग्रीटिंग कार्ड, कैंडी बनाने वालों, रेस्तरांओं, होटलों और फूल एवं उपहार बेचने वाले स्टोरों की विज्ञापनबाजी के बावजूद इस दिन को जो पति या बॉयफ्रेंड भूल जाता है, उसकी मुसीबत आ पड़ती है।

ससुरालियों के दिल की राह (उनके पेट से होकर गुजरती है)

भारतीयों से विवाह बन्धन में बंधने वाले अमेरिकी अपने जीवनसाथी की संस्कृति में भोजन को दिए जाने वाले महत्व को बहुत जल्दी पहचान लेते हैं। सच तो यह है कि भोजन करने का कौशल भी परिवार की स्वीकृति पाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पश्चिमी बंगाल में अपने ससुरालियों के यहां पहली बार भोजन करना पीटर के लिए भौंचक कर देने वाला अनुभव रहा- उनके सामने रखे गए चांदी के थाल में 22 किस्म के व्यंजन थे। पीटर तो समझ ही नहीं पाए कि खाने की शुरुआत कहां से की जाए। अभिभूत कर देने वाली दामादों की भारतीय खातिरदारी और भारतीय भोजन से उस पहली मुठभेड़ के बाद पीटर का इस हद तक देसीकरण हुआ है कि वह बंगाली ढंग से पकाई गई मछली हाथ से ही खाते हैं। मोनी गद्गद् भाव से बताती हैं, ''यह तो कांटों से भरी एलिश मछली भी बहुत आराम से खा लेते हैं।''

बिरयानी, कबाब, मछली और मसाला डोसा अमेरिकियों के कुछ प्रिय व्यंजन हैं और इन्हीं से उनकी भारत की भोजन यात्रा के चार धाम पूरे हो जाते हैं। करत करत अभ्यास एरियाना खुद अच्छा भारतीय भोजन पकाने लगी हैं। सुनील बताते हैं, ''शुरू में केराली व्यंजन बनाते हुए एरियाना बड़े जतन से हर चीज़ माप-तोल कर डालती थीं लेकिन अब तो 'चुटकी भर' और 'जरा सा' माप की स्वीकृत इकाइयां बन चुकी हैं।''

सांस्कृतिक झटके (बने हँसी के पात्र)

अमेरिकी जोड़ीदारों का कहना है कि बरसों के प्रयास के बाद भी उनके लिए भारतीय जीवन शैली की राहें बहुत आसान नहीं हुई हैं। कभी-कभी भारतीय जीवन शैली अपनाने के उनके अतिरिक्त प्रयास ही हंसी का कारण बन जाते हैं। एरियाना की पहली साड़ी पहनने में उसकी मदद करते हुए पिनों की सुनील की गणना कुछ ऐसी गड़बड़ाई कि एरियाना का कमर से ऊपर का हिस्सा अनढका ही रह गया और वह कैराली कुलवधू की जगह अजन्ता की अप्सरा सी दिखने लगी।

लेकिन कभी-कभी पासा सीधा भी पड़ जाता है- केविन जब भारतीय ढंग के कपड़े पहनते हैं तो उन्हें फ़िल्म स्टार कहा जाता है। और शुरुआती प्रयास की गड़बड़ी के बाद से एरियाना साड़ी में बहुत सहज अनुभव करती हैं।

पर्व: दो गुना आनन्द

पर्वों-त्योहारों के मामले में तो भारतीय अमेरिकी जोड़ियों का सुख सचमुच दो गुना होता दिखता है। उत्तरी वर्जिनिया में सुनील और एरियाना के घर की वार्षिक दीवाली की दावत अब परम्परा बन चुकी है। मोनी और केविन अटलांटा, जॉर्जिया में दुर्गा पूजा आयोजित करते हैं तो अंशुल और जेनिका क्रिसमस, होली और हनुक्का मनाते हैं।

ज़्यादातर जोड़ियां क्रिसमस मनाती हैं। हैदर बताती हैं, ''ईसाई होने के बावजूद पीटर के घर में क्रिसमस ट्री सजाने का अनुभव नहीं था लेकिन वह मेरी अमेरिकी परम्परा में धीरज से साथ निभाते हैं।'' मोनी का मामला इससे उल्टा था। केविन के साथ मनाए पहले क्रिसमस को याद करते हुए वह बताती हैं, ''मैं हमेशा से क्रिसमस का पर्व मनाना चाहती थी इसलिए केविन ने मेरे लिए सभी परम्परागत चीजें वैसे ही कीं जैसे कोई किसी बच्चे के लिए करता- उन्होंने क्रिसमस खरीद कर सजाया, उपहार सजाए.... बस सांता क्लॉज़ के सिवा सब कुछ था।''

जेनिका खास ख्याल रखती हैं कि हर बरस अंशुल को अपना उपहारों से भरा स्टॉकिंग और एक क्रिसमस अलंकरण जरूर मिले और अंशुल को भी क्रिसमस के परम्परागत मेमने के गोश्त का इंतजार रहता है- आखिर उनकी कश्मीरी परम्परा के अनुरूप है।

स्नेह बंधनों का स्वागत (और उस प्यार का जो जारी है)

अपने भारतीय जीवनसाथी की संस्कृति के अपने मनपसन्द पक्ष के बारे में पूछने पर अमेरिकी जोड़ीदारों का एक सुर में जवाब था- परिवार के मजबूत स्नेह बन्धन! मोनी कहती हैं, ''भारत में घर के दरवाज़े सभी परिवारियों के लिए सदा खुले रहते हैं।'' केविन परिवार के महत्व को समझते हैं और अपने परिवारिक दायित्वों को खुशी-खुशी निभाते हैं।

इन सभी युवा जोड़ियों के लिए दूसरी संस्कृति से आए अपने जीवनसाथी से विवाह के बन्धन में बंधना रोचक भी रहा और आंखें खोल देने वाला भी। समय के साथ-साथ क्या सांस्कृतिक अंतर सचमुच मिटने लगते हैं? इस सवाल का जवाब मुझे एक ऐसी जोड़ी को देखकर मिल पाया जिनका विवाह समय और दूरी की बाधाओं पर विजय पा चुका है। ऑफेलिया दक्षिणी अमेरिका की एक कॉलेज शिक्षक है और उनके पति एमॉस गोना गोवा के मूलवासी कॉलेज शिक्षक। दोनों 70 के दशक से न्यू जर्सी में रह रहे हैं और अब सेवानिवृत्त हैं। जब मैंने ऑफेलिया से पूछा कि सांस्कृतिक अंतरों को कम करने के बारे में वह स्पैन के पाठकों को क्या बताना चाहेंगी तो उनका उत्तर था,''यह अजीब लग सकता है लेकिन 46 साल के अपने वैवाहिक जीवन के बाद मेरे पास इस विषय में कहने को कुछ नहीं है।'' मैंने श्रीकांत को यह बात बताई और हम मुस्करा दिए।

साभार: एन ली शेषाद्रि

एन ली शेषाद्रि, *बाएं, अपने पति श्रीकांत के साथ विवाह के अवसर पर लिए गए फोटो में। वह नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास में असिस्टेंट कल्चरल अफ़ेयर्स ऑफ़िसर हैं। अमेरिकी दूतावास के कल्चरल काउंसलर* ***अदनान सिद्दीक़ी*** *ने भी इस लेख में योगदान किया है।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।